नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 12, अंक : 1, जनवरी 2024

हिन्दी फिल्मों में भक्ति-काव्य का सांगीतिक रूपांतरण एवं प्रभाव

मोनिका टक्कर
शोधार्थी, मानविकी संकाय, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी,
फगवाड़ा, जालंधर

डॉ. कुलविंदर सिंघ
एसोसिएट प्रोफेसर, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी
फगवाड़ा, जालंधर

सार-संक्षेप

हिन्दी भक्ति काव्य और संगीत के अंतर सम्बन्ध को उजागर करते हुए हिन्दी फिल्म संगीत में प्रयुक्त हुए भक्ति गीतों में निहित कलात्मक और भावात्मक सौन्दर्य का आकलन प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रतिपाद्य विषय है। संगीत में ईश्वर से साक्षात्कार कराने की असीम शक्ति निहित है। इस उद्देश्य को पाने में काव्य-रचित शब्दों के मर्मस्पर्शी भाव के साथ संगीत के स्वरों का गुंजन ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध होता है जो मानव मन को एकाग्र करके इतना अधिक तन्मय और स्थिर कर देता है कि हृदय की समस्त वृत्तियाँ केंद्रीभूत होकर अंतमुर्खी हो जाती है। भक्ति की पराकाष्ठा भी इसी अंतर्निहित भावों से है जो संगीत के स्वरों और कविता की छंदोबद्ध शब्दावली पर आश्रित है। संगीत और काव्य के संयुक्त रूप ने भक्तिपरक रचनाओं को परकाष्ठा प्रदान की है। मानव हृदय की आवाज बन चुके इन भक्ति-गीतों का स्पंदन हिन्दी फिल्म संगीत के अंतर्गत बखूबी परिलक्षित होता है। भक्ति पूर्ण काव्य और भाव पूर्ण संगीत आदि काल से मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। हिन्दी फिल्म संगीत में ऐसे भक्ति काव्य और संगीत के प्रभाव से उपजी अनगिनत रचनाओं ने मानवीय जीवन को सदा सम्बल प्रदान किया है। इसी तथ्य का अध्ययन प्रस्तुत शोध-पत्र का उदेश्य तथा प्रतिपाद्य विषय है। प्रस्तुत शोध-पत्र को सम्पन्न करने के लिए पुस्तकों, पत्र, पत्रिकाओं का पठन- पाठन, स्वचिंतन तथा परस्पर विचार-विमर्श किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि संगीत और काव्य के अंतर सम्बन्ध की सनातन परंपरा हिन्दी फिल्मों में भक्ति पूर्ण पदों तथा गीतों में संगीत कला के भाव पूर्ण प्रयोग से विलक्षण सौन्दर्य को धारण करके मुखरित हुई है। संगीत और भक्ति काव्य का मनोरम संगम हिन्दी फिल्मों के माध्यम से ध्वन्यांकित होकर जन-जन के जीवन का अभिन्न हिसा बन गया है जो मानव की भक्ति पूर्ण प्रवृति को सम्बल प्रदान करता है। कुशल फिल्म संगीत निर्देशकों तथा मर्मज्ञ कवियों के परस्पर कला प्रयोग से रूपांतरित होकर बनी संगीत भक्ति रचनाओं द्वारा सांस्कृतिक उनती हुई है जो की कला और भाव दोनों दृष्टिओं से एक बड़ी उपलब्धि है। ये रचनाएँ सांस्कृतिक उपलब्धि के साथ-साथ संगीत साधकों के लिए सीखने-सिखाने और अभ्यास करने हेतु अपार अध्ययन सामग्री भी है।

मुख्य शब्द– भक्ति काव्य, हिन्दी फिल्म, प्रौद्योगिकी, अष्टछाप के कवि, बीसवीं शताब्दी

शोध-पत्र

मानव एक भावनाशील प्राणी है। मानव मन में भावनाओं का उमड़ना तथा उनकी अभिव्यक्ति की तड़प ठीक उसी प्रकार स्वाभाविक है जैसे श्वास लेना और जल ग्रहण करना। सुख-दुःख, मिलना-बिछड़ना, जीवन-मृत्यु, आदि जीवन के अनंत भावों के उपजने तथा उनकी अभिव्यक्ति से मिलने वाली तृप्ति को पाने हेतु मानव स्वाभाव से ही चिंतनशील और कर्मशील रहा है। उसकी इसी प्रवृति के फलस्वरूप संगीत काव्य तथा अन्य अनेक कलाओं का प्रादुर्भाव और विकास हुआ। सदियों से मानव कला-साधना करता आ रहा है और उसने अपनी अभिव्यक्ति के लिए अलग-अलग समय पर अनेकों साधन खोजे और अपनाए।

आधुनिक युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विशेष युग है। इसलिए पारम्परिक कला साधना को आधुनिक प्रौद्योगिकी का सबल सम्बल मिल गया है। हिन्दी फिल्मों का प्रादुर्भाव इस प्रौद्योगिकी का बड़ा चमत्कार है। आधुनिक फिल्में अभिव्यंजना का एक ऐसा प्रभावशाली साधन बन के मुखरित हुईं हैं जिनमें जीवन में घटित होने वाली घटनाओं को सजीव रूप से प्रकट करने की अद्‌भुत सम्भावना है।

हर सदी अभिव्यक्ति के लिए अपना प्रिय माध्यम चुनती है। उन्नीसवी और बीसवीं शताब्दी विज्ञान की शताब्दी रही। विरोधाभासों की इस सदी में नैतिक पतन भी बहुत हुआ। इस सदी के सुख-दुःख को अभिव्यक्त करने के लिए सिनेमा से बेहतर माध्यम कोई नहीं हो सकता था क्योंकि

यह एक मात्र कला-माध्यम है जो मशीन की कोख से जन्म लेता है। (शर्मा)

नाटक तो मानवीय संस्कृति में अभिव्यक्ति का पारम्परिक माध्यम है ही परन्तु फिल्म कला नाट्य कला का अति विकसित और सक्षम रूप बनके मुखरित हुई है। गीत संगीत नाट्य कला का सहचर रहा है जिसकी पुष्टि भरत मुनि के नाट्यशास्त्र का अध्ययन करने से सहज ही हो जाती है।

नाट्यकला मुख्यतः दृश्य-श्रव्य तत्वों के मूर्तिकरण की कला है। इसका प्राण तत्व है अभिनय और इसका साध्य है—सौन्दर्य की निष्पति। नाट्य में मनुष्य स्वभावतः सुख-दुःख के समस्त अनुभवों को, जो अपने प्राकृत रूपों में प्रायः अमूर्त, अगोचर, मनोमय तथा बुद्धिगम्य मात्र होते हैं—वाचिक, अंगिक तथा सात्विक अभिनयों में रूपान्तरित किया जाता है। परिणामतः नाटकों में मानव की अपरिमेयता तथा अनंत संवेदनाएँ अमूर्त से मूर्तता की और, सूक्ष्म से स्थूलता की और तथा अपरोक्ष से प्रत्यक्ष की ओर अग्रसर होती हुई सुन्दर दृश्य कलात्मकता का स्वरूप धारण कर लेती है। (काले, 51)

वास्तव में फिल्म या सिनेमा नाट्य कला का परिवर्धित रूप है। टेक्नोलॉजी ने नाट्य कला को रूपांतरित करके प्रस्तुतीकरण की विधि को नया रूप दे दिया है, वर्णय विषय तो मानव जीवन ही रहता है। नाटकों की तरह गीत संगीत और दृश्यों के अनुकूल पार्श्व संगीत का प्रावधान फिल्मों में और अधिक प्रबल होकर अस्तित्वमान हुआ है।

सिनेमा अधुनातन कला विद्या है जिसका जन्म कुछ वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप हुआ। लेकिन उसे कला-विधा का दर्जा दिलाने वाले वैज्ञानिक नहीं बल्कि निर्देशक, कैमरामैन, संगीतकार, लेखक तथा अन्य सांस्कृतिक कर्मी थे। (जोशी 17)

हिन्दी फिल्मों का उद्‌भव तथा विकास

मानव का कला अनुराग तथा खूब से खूबतर होने की प्रवृति के फलस्वरूप अनगिनत अविष्कार हुए और प्रगति का ये क्रम कालातीत जारी है। सन 1645 में जर्मन के युवा गणितज्ञ 'एथेनासियस किर्चर' तथा 1870 में अमेरिकी वैज्ञानिक 'टॉमस अल्वा एडिसन' तथा थामस एरमेट आदि वैज्ञानिकों ने वर्षों तक अध्ययन और अन्वेषण करके फिल्म प्रौद्योगिकी का अविष्कार किया जिसे भारतीय मूल के माणिक डी सेठना और घुंडी राज गोविन्द फाल्के (दादा साहेब फाल्के) ने अपने देश में सर्वप्रथम मूक फिल्मों का प्रदर्शन किया। सबसे पहली मूक फिल्म 3 मई 1913 को 'राजा हरीशचन्द्र' बनायीं। 1931 में अर्देशिर ईरानी ने सबसे पहली स्वाक फिल्म 'आलम आरा' बनाने का श्रेय प्राप्त किया। (शर्मा 16 -17)

हिन्दी फिल्मों में भक्ति-काव्य का सांगीतिक रूपांतरण

संगीत तथा काव्य कला अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुए भी अनेक अंशों में अन्योन्याश्रित हैं। अतः दोनों का सुंदर समन्वय एक दिव्यानंद को उत्पन्न कर देता है।

पाश्चात्य विद्वान कारलाइल के अनुसार, ''संगीतमय विचार ही काव्य है।'' कविता मनोवेगपूर्ण और संगीतमय भाषा में मानव अन्तःकरण की मूर्त तथा कलात्मक व्यंजना करती है। (गर्ग 112)

छंदोबद्ध भक्ति में शब्दों द्वारा अपने इष्ट देव अथवा किसी अन्य देवी-देवता की आराधना स्मरण तथा वंदन 'भजन' कहलाया। अर्थात भक्तिपरक गेय काव्य को ही 'भजन' संज्ञा प्राप्त हुई। यही भक्ति गीत मानवीय अंतःकरण में भक्ति की अविरल धारा को प्रवाहित करने का सबसे उचित माध्यम बने। इष्ट आराधना से परिपूर्ण इन भक्ति गीतों को हृदयस्पर्शी बनाने के लिए भारतीय संगीत के कर्णप्रिय स्वरों में निबद्ध किया गया।

यूँ तो भारतीय शास्त्रीय संगीत की अन्य गायन शैलियों यथा ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती इत्यादि में भी भक्ति से ओत-प्रोत काव्य का प्रयोग होता है परंतु परमार्थिक दृष्टि से अन्य गायन-शैलियों की अपेक्षा भजन गायन गायक तथा श्रोता दोनों के लिए विशेष कल्याण प्रद है। संगीत के स्वरों में गुंथी प्रभु भक्ति में शब्दावली के प्रभाव से प्रत्येक प्राणी का मन स्थिरता को प्राप्त कर आत्मिक आनंद की अवस्था तक पहुँच जाता है यह भक्ति गीत ना केवल उनकी आंतरिक शुद्धि में सहायक होते हैं, अपितु उनके बाहरी आचरण को भी प्रभावित करते हैं। इस सरल व सुलभ माध्यम के द्वारा व्यक्ति एक सभ्य जीवन तथा प्रभु भक्ति आसानी से प्राप्त कर लेता है जोकि समाज के संस्कारी होने में तथा समाज के शुद्धिकरण में भी सहायक सिद्ध हुए।

मध्यकाल संगीत और भक्ति काव्य की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण काल था। जिसे इतिहासकारों ने संगीत और हिन्दी भक्ति काव्य का स्वर्ण युग माना। इस काल खंड में संगीत और भक्ति काव्य का सही अर्थों में एक अटूट सम्बन्ध स्थापित हुआ। जिसने इन दोनों ललित कलाओं को एक-दूसरे पर आश्रित कर अन्तर्सम्बन्धित बना दिया। संगीत की विभिन्न गायन वादन शैलियों का तथा भक्ति काव्य की विभिन्न परंपराओं का ये उत्थान काल था। भक्ति काव्य की रचनाओं ने जहाँ संगीत को पवित्र आँचल दिया, वहीं संगीत के माध्यम से भक्ति काव्य के आध्यात्मिक स्वरूप का हर हृदय को दिग्दर्शन कराया।

मध्य काल से भक्ति रचनाओं की जो परंपरा विक्सित हुई उनमें अगर लिखित भक्त कवियों का विशेष योगदान है।

- **अष्टछाप के कवि**—(सूरदास, कुंभ दास, कृष्ण-दास, चतुर्भुज दास, छीत स्वामी, नंददास, परमानंद, गोविन्ददास)
- मीराबाई के पद
- भक्त कबीर के पद
- गुरु नानक देव जी की वाणी
- चैतन्य महा प्रभु के संकीर्तन
- भक्त नामदेव की रचनाएँ
- तुलसीदास जी के पद इत्यादि।

इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए आधुनिक काल में भी भक्ति रचनाओं की

ये परंपरा प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रही है। जहाँ पर मध्यकालीन संत कवियों की परंपरा का निर्वहन करते हुए उसमें अपनी सृजनात्मकता से कुछ आधुनिक कवियों ने कुछ नया भी जोड़ते हुए अनेक भक्ति रचनाएँ मानवीय समाज को वरदान स्वरूप प्रदान की है। बीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ एक मशीनी युग का भी शुभारंभ हुआ। जैसा कि हम जानते हैं कि किसी भी क्षेत्र में तकनीक तथा उससे जुड़े विकास कार्यों का बहुत गहरा संबंध रहता है। जिसका प्रभाव हमें गीत संगीत के क्षेत्र में भी देखने को मिला। प्रारंभिक समय काल में जब इन वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा गीत संगीत के ध्वनियांकन का कार्य प्रारंभ हुआ, तो सबसे पहले इसका प्रयोग तत्कालीन गायक गायिकाओं द्वारा भजन गीतों से ही प्रारंभ किया गया था। ध्वनि रिकॉर्डिंग से संबंधित उन मशीनों के माध्यम से संगीत को केवल रिकॉर्ड ही नहीं बल्कि और भी बेहतरीन और उम्दा बनाया जाता था। जिसमें संगीत की विविध गायन परम्पराओं एवं गायन शैलियों को एल.पी. रिकार्ड्स में संरक्षित रखने व उनका विश्व स्तर पर प्रचार-प्रसार करने की परंपरा चली।

इस तकनीकी विकास ने हिन्दी फिल्मी संगीत के निर्माण के क्षेत्र में बहुत बड़ा कार्य किया। क्योंकि संगीत निर्देशन के इस क्षेत्र में आरम्भ से ही तकनीक का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। तकनीक उन्नति का प्रतीक ध्वनि संरक्षण (Sound Recording) के यंत्रों ने न सिर्फ संगीत को रिकॉर्ड किया अपितु संगीत की गुणवत्ता को भी उच्च श्रेणी का बनाया।

हिन्दी फिल्मों में मध्य कालीन संत कवियों तथा आधुनिक कवियों की भक्ति रचनाओं को अत्यंत गुणवत्तापूर्वक संगीत संयोजन द्वारा प्रयोग किया गया। गुण सम्पन्न संगीत निर्देशकों की रचनाधर्मिता तथा प्रतिभा सम्पन्न पार्श्व गायक-गायिकाओं की आवाज और ध्वन्यांकन की तकनीक ने इन भक्ति रचनाओं को इस तरह से रूपांतरित किया कि ये रचनाएँ जन-जन के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गयी। संत भक्त कवियों तथा आधुनिक गीतकारों की भक्ति और नीति पूर्ण रचनाएँ अपने काव्यात्मक सौन्दर्य तथा दार्शनिक समृद्धता के कारण निश्चित रूप से अत्यंत सम्माननीय रचनाएँ रहीं। परन्तु हिन्दी फिल्मों में हुए सांगीतिक रूपांतरण ने इन रचनाओं को लोकप्रिय बनाने में शब्दातीत भूमिका निभाई। इन हिन्दी फिल्मी भक्ति रचनाओं ने किस तरह मानव समाज पर अपना रचनात्मक प्रभाव डाला उसका आकलन करने हेतु हिन्दी फिल्मों के अंतर्गत ध्वन्यांकित हुई रचनाओं के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

हिन्दी फिल्मों में प्रयुक्त मध्यकालीन संत भक्त कवियों के कुछ भजन

क्रम	भक्ति गीत	फिल्म	साल	संगीत निर्देशक	रचनाकार	गायक/ गायिका	देवी देवता	लिंक
1	प्रभु जी मोरे अवगुण चित्त न धरो	स्वामी विवेकानंद	1994	सलिल चौधरी	संत सूरदास	कविता कृष्णा मूर्ति	श्री कृष्ण	Prabhu ji mere avgun chit na dharo bhajan, Song
2	जो तुम तोड़ो पिया	मीरा	1979	पं. रवि शंकर	मीरा बाई	वाणी जयराम	श्री कृष्ण	Jo Tum Todo Piya / Hema Malini / Meera / Vani Jairam / Pt. Ravi Shankar / Hindi Devotional Songs
3	श्याम माने चाकर राखो जी	मीरा	1979	पं. रवि शंकर	मीरा बाई	वाणी जयराम	श्री कृष्ण	Shyam Mane Chakar Rakho Ji - Hema Malini - Meera - Vani Jairam - Hindi Devotional Songs
4	मेरे तो गिरिधर गोपाल	मीरा	1979	पं. रवि शंकर	मीरा बाई	वाणी जयराम	श्री कृष्ण	Mere to Giridhar Gopal (HD) - Meera Songs - Hema Malini - Vinod Khanna -Vani Jairam

5	पायो जी मैने राम रतन धन पायो	मीरा		रविंदर जैन	मीरा बाई	साधना सरगम	श्री कृष्ण	पायो जी मैने राम रतन धन पायो
6	मंगल भवन अमंगल हरि	रामायण टीवी सीरियल शीर्षक गीत, दशरथ के घर जन्मे राम (रामायण चौपाई)			तुलसी दास जी	रवि राज	श्री राम	मंगल भवन अमंगल हरि
7	मधुकर श्याम हमारे चोर	भक्त सूरदास	1942	ज्ञान दत्त	सूरदास	के. एल. सहगल	श्री कृष्ण	
8	कर्म की गति न्यारी	मीरा बाई			मीरा बाई	लता मंगेशकर	श्री कृष्ण	
9	हरी हरी सुमिरन करो	चिंतामणि सूरदास			संत सूरदास	अनूप जलोटा		
10	श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी					रविंद्र जैन	कृष्णा भजन	

आधुनिक काल के कवियों की लोकप्रिय भक्ति रचनाएँ:-

क्रम	भजन मुखड़ा	फिल्म/एल्बम	साल	संगीत निर्देशक	गीतकार	गायक/ गायिका
1	इतनी शक्ति हमें दे न दाता	अंकुश	1986	कुलदीप सिंह	अभिलाष	पुष्पा पगधरे, सुषमा श्रेष्ठ
2	ऐ मालिक तेरे बन्दे हम	दो आँखें बारह हाथ	1957	वसंत देसाई	भरत व्यास	लता मंगेशकर
3	अल्लाह तेरो नाम	हम दोनों	1961	जयदेव	साहिर लुधियानवी	लता मंगेशकर
4	हम को मन की शक्ति देना	गुड्डी	1971	वसंत देसाई	गुलजार	वाणी जयराम
5	ऐरी मैं तो प्रेम दीवानी	नौ बहार	1952	रोशन लाल	मीराबाई, शैलेंद्र, सतेंदर अथैया	लता मंगेशकर
6	बाजे मुरली या बाजे	राम श्याम गुण गान		श्रीनिवास खाले, अनिल मोहिले	पं. नरिंदर शर्मा	लता मंगेशकर, पं. भीमसेन जोशी
7	राम का गुणगान करिये	राम श्याम गुण गान		श्रीनिवास खाले,अनिल मोहिले	पं नरिंदर शर्मा	लता मंगेशकर, पं. भीमसेन जोशी
8	ओ पालन हरे निर्गुण और न्यारे	लगान	2001	ए.आर.रहमान	जावेद अख़्तर	लता मंगेशकर, उदित नारायण
9	कान्हा आन पड़ी मैं तेरे द्वार	शागिर्द	1967	लक्ष्मीकांत प्यारेलाल	मजरूह सुल्तानपुरी	लता मंगेशकर
10	तोरा मन दर्पण कहलाये	काजल	1965	रवि	साहिर लुधियानवी	आशा भोंसले
11	सुख के सब साथी	गोपी	1970	कल्याणजी, आनंदजी	राजेंद्र कृष्णन	मोहमद रफी
12	रामचंद्र कह गए सिया से	गोपी	1970	कल्याणजी, आनंदजी	राजेंद्र कृष्ण, श्रीमद्भगवत पुराण	महेंद्र कपूर

13	तू प्यार का सागर है	सीमा	1955	शंकर जयकिशन	शैलेंद्र	मन्ना डे
14	यशोमती मैया से बोले नंदलाला	सत्यम शिवम सुंदरम	1978	लक्ष्मी कांत प्यारे लाल	पं. नरेन्द्र शर्मा	मन्ना डे, लता मंगेशकर
15	सत्यम शिवम सुंदरम	सत्यम शिवम सुंदरम	1978	लक्ष्मी कांत प्यारे लाल	पं. नरेन्द्र शर्मा	लता मंगेशकर, दरबारी कान्हड़ा
16	तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए	आशा	1980	लक्ष्मी कांत प्यारे लाल	आनंद बक्शी	नरिंदर चंचल, महिंदर कपूर, आशा भोंसले
17	हे नाम रे सब से बड़ा तेरा नाम	सुहाग	1979	लक्ष्मी कांत प्यारे लाल		आशा भोंसले, मोहमद रफी
18	श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी		2006			पं अजय पोहनकर

सुप्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत तथा फिल्मी कलाकारों द्वारा गायी गयी मध्यकालीन संत कवियों की रचनाओं के कुछ उदाहरण :-

क्रम	भजन मुखड़ा	कवि	गायक/ गायिका	
	मंगल भवन अमंगल हारी	गोस्वामी तुलसीदास जी	(रवि राज का गाया, रविंद्र जैन जी का संगीत) जसपाल सिंह	(रामायण टीवी धारावाहिक का शीर्षक गीत, राजा दशरथ के घर राम जन्म पर रामायण की चौपाई), गीत गाता चल
1	पायो जी मैंने राम रतन धन पायो	संत मीरा बाई	डी.वी.पलुस्कर, लता मंगेशकर जी	
2	चलो मन गंगा जमुना तीर	संत मीरा बाई	डी. वी. पलुस्कर	
3	ठुमक चलत रामचंद्र	गोस्वामी तुलसीदास	डी. वी. पलुस्कर, लता मंगेशकर	
4	जब जानकी नाथ सहाय करे	गोस्वामी तुलसीदास	डी. वी. पलुस्कर	
5	भजमन राम चरण सुखदाई	गोस्वामी तुलसीदास	पं भीमसेन जोशी	
6	जो भजे हरि को सदा	स्वामी ब्रह्मानंद	पं भीमसेन जोशी	
7	उड़ जायेगा हंस अकेला	संत कबीर	पं कुमार गन्धर्व	
8	निर्भय निर्गुण गाऊंगा	संत कबीर	पं कुमार गन्धर्व	
9	मैं बिरहिनि बैठी जागूँ	संत मीरा बाई	विदुषी किशोरी अमोनकर	
10	उधो कर्मन की गति न्यारी	भक्त सूरदास	स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर	
11	अखियाँ हरी दर्शन की प्यासी	भक्त सूरदास	मोहम्मद रफी साहिब	
12	प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी	भक्त रविदास	अनूप जलोटा	
13	चला वाही देस	संत मीरा बाई	लता मंगेशकर जी	
14	माई सांवरे रंग राची	संत मीरा बाई	पं जसराज	
15	झीनी झीनी चदरिया	संत कबीर	गुदेचा बंधु	
16	मैं न जिऊँ बिन राम	गोस्वामी तुलसीदास	पं राजन साजन मिश्रा	
17	श्री रामचंद्र कृपालु भजमन	गोस्वामी तुलसीदास	लता मंगेशकर जी	
18	बीत गए दिन भजन बिना रे	संत कबीर	जगजीत सिंह	

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र में किए गए अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि हिन्दी फिल्मों में प्रयुक्त हिन्दी भक्ति काव्य का सांगीतिक रूपांतरण अत्यंत प्रभावशाली है। इस रूपांतरण ने भक्त कवियों तथा आधुनिक गीतकारों की भक्ति रचनाओं को जन साधारण द्वारा आत्मसात करने और अपनाने में अपनी प्रशंसनीय भूमिका निभाई हैं। इन रचनाओं का बारम्बार गायन जहाँ समाज को नैतिक मूल्यों से जोड़ने और ईश्वर से जुड़ने का सशक्त आधार देगा वहीं संगीत कला के साधकों को अपनी सांगीतिक उन्नति हेतु भी समृद्ध अध्ययन सामग्री प्रदान करता रहेगा। इन रचनाओं का शब्द सौन्दर्य तथा उसके अनुकूल सांगीतिक संयोजन और सबसे ऊपर प्रतिभा सम्पन्न गायक-गायिकाओं द्वारा उनका गायन कला की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। इसके साथ-साथ भक्ति काव्य की सार्थकता को भी रोचक पुराण ढंग से समाज में प्रवाहित करता रहेगा।

आज तकनीकी परिवर्तन के युग में हिन्दी सिनेमा केवल सिनेमा घरों के बंद दरवाजों में सिमट कर नहीं रह गया है। उसके व्योम विस्तार में अब सर्वसाधारण के स्मार्ट टी.वी., डेस्कटॉप, लैपटॉप एवं मोबाइल आदि सभी शामिल हो चुके हैं। फिल्मों के नए कलेवर के रूप में कई हिस्से में बनी फिल्म सीरीज यानी बेब सीरीज प्रचलित हो रहीं हैं। अब जन-जन तक पहुँच होने के कारण इनके पास दर्शकों का विशाल दायरा है। ऐसी स्थिति में संगीतज्ञों संगीतनिर्देशकों के पास एक स्वर्णिम अवसर है कि भक्ति और नीति से ओत-प्रोत समृद्ध सांगीतिक रचनाओं की परम्परा को आगे बढ़ाया जाए। ये संगीतज्ञों का दायित्व भी है कि वे समाज रूप से युवा पीढ़ी को उचित दिशा अपेक्षित रोचक ढंग से प्रदान करें।

'हमें सर्व साधारण की वृत्तियों को उभारना नहीं, बल्कि परिमार्जित करना है।' (शर्मा 259)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सौरभ, इन्दु शर्मा, भारतीय फिल्म संगीत में ताल-समन्वय, कनिष्क पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर

काले, मनोहर, भारतीय नाट्य सौन्दर्य, हिन्दी माध्यम, कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

जोशी, ललित, हॉउसफुल, हिन्दी सिनेमा का परिदृश्य

सौरभ, इन्दु शर्मा, भारतीय फिल्म संगीत में ताल-समन्वय, कनिष्क पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूसर

गर्ग, लक्ष्मीनारायण, संगीत निबंध सागर, संगीत कार्यालय हाथरस

गणेश प्रसाद शर्मा, साक्षात्कार : प्रेम सागर ग्रोवर, उद्धृतः संगीताचार्य पं. गणेश पार्षद शर्मा 'नादरस' कृत बंदिश-निधि एवं सूत्र